अगर आप
जीत गए तो
खुश हो जाओगे और
हार गए है तो समझदार।
– अज्ञात

दूसरा पहलू अनलॉक 1.0 का

मॉल, होटल, रेस्ट्रॉन्ट और धार्मिक स्थलों को 8 जून से खोलने की बात है। स्कूल, कॉलेज, कोचिंग संस्थान आदि पैरंट्स तथा अन्य स्टेकहोल्डर्स से चर्चा करके जुलाई में खोले जा सकेंगे। हां, जो इलाके कंटेनमेंट एरिया में आते हैं, वहां ये छूटें नहीं लागू होंगी।

मनीषा गुरूरानी।

देश लॉकडाउन 5.0 में प्रवेश कर चुका है लेकिन ज्यादा बड़ी बात यह कि इसका दूसरा पहलू अनलॉक 1.0 का है। इसमें देश की बंद आर्थिक–सामाजिक गतिविधियों को धीरे–धीरे खोलने का काम होगा। इस सिलसिले में सबसे बड़ी छूट यह दी गई है कि देशवासियों के एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने पर कोई रोक नहीं होगी। रेलवे ने सोमवार से 100 जोड़ी ट्रेनें चलाने का ऐलान कर दिया है जिसमें बुकिंग सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप हो रही है।

रात के कर्फ़्यू की अवधि भी शाम सात बजे से सुबह सात बजे तक के पुराने ढर्रे से 4 घंटे घटा दी गई है। अब यह रात 9 बजे से सुबह 5 बजे तक ही लागू रहेगा। यानी नाइट लाइफ तो अभी दूर की बात है लेकिन लोग शाम को बाजार से बिना किसी हड़बड़ी के घर आ सकते हैं और सूरज निकलने से पहले सैर पर जा सकते हैं।

मॉल, होटल, रेस्ट्रॉन्ट और धार्मिक स्थलों को 8 जून से खोलने की बात है। स्कूल, कॉलेज, कोचिंग संस्थान आदि पैरंट्स तथा अन्य स्टेकहोल्डर्स से चर्चा करके जुलाई में खोले जा सकेंगे। हां, जो इलाके कंटेनमेंट एरिया में आते हैं, वहां ये छूटें नहीं लागू होंगी।

कम से कम 30 जून तक वहां लॉकडाउन की सारी बंदिशें जारी रहेंगी। एक और शर्त इन छूटों के साथ यह जुड़ी है कि कोई राज्य सरकार जरूरी समझे तो वह अपने यहां इनमें से कोई भी छूट वापस ले सकती है।

यानी भले केंद्र सरकार ने एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने की छूट दे दी हो, कोई राज्य सरकार चाहे तो अपना बॉर्डर सील कर सकती है।

इसके अलावा लॉकडाउन की निरंतरता में कुछ प्रमुख पाबंदियां, जैसे इंटरनैशनल फ्लाइट, मेट्रो रेल, सिनेमा हॉल, जिम, बार, स्विमिंग पूल आदि पर रोक पहले की ही तरह लागू रहेगी। इनके हटने की कोई समयसीमा नहीं तय की गई है। याद रहे, लॉकडाउन हटाने की प्रक्रिया दुनिया के कई देशों में जारी है, लेकिन बेहतर होगा कि हम खुद को उस पांत से बाहर ही मानें।

दोनों अमेरिकी महाद्वीपों में अकेले कनाडा को छोड़कर लॉकडाउन को कहीं और गंभीरता से लागू ही नहीं किया, लेकिन कोरोना वायरस की गिरफ्त में बुरी तरह आने के बाद सख्ती से लॉकडाउन लागू करने वाले इटली, स्पेन, जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे यूरोपीय देशों में महामारी अभी या तो स्थिर है या उतार पर है।

इसके उलट अपने देश में बीमारी से जुड़े सारे चिंताजनक आंकड़े हर रोज ही बढ़े हुए आ रहे हैं। और तो और, नॉर्थईस्ट जैसे उन गिनती के इलाकों में भी वायरस तेजी से फैल रहा है जो हाल तक इससे बचे माने जा रहे थे।

जाहिर है, ऐसे में लॉकडाउन से बाहर आने की कोशिश खतरों से खाली नहीं है। लोगों की रोजी–रोटी बचाने के लिए यह खतरा हमें उठाना होगा, लेकिन फूंक–फूंककर कदम रखने और जरूरी हो तो एक कदम पीछे हट जाने की समझ लेकर चलें तो यह कठिन दौर भी हम एक दिन पार कर लेंगे।

सामाजिक परिवर्तन

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

एक भीलनी के हाथ से उसके द्वारा ही चख के दिए गए बेरों ने किस तरह के सामाजिक परिवर्तन को इंगित किया, इस पर किसी ने ध्यान देने की कोशिश नहीं की। महाकवि वाल्मीकि और स्वयं महामना तुलसीदास ने भी इस प्रकरण को काव्यात्मक महिमागान के इतर कुछ और नजरिए से देखने की कोशिश नहीं की।

रामायण के सामाजिक निहितार्थों तथा उसके वर्गीय–वर्णीय प्रक्षेपों के सांदर्भिक बिंदु इतने सूक्ष्म हैं, जिनके विश्लेषण, संश्लेषण और पुनर्व्याख्यन की आवश्यकता है। किंतु अकादमिक शोधों में महाकवि की संवेदनाओं और श्रीराम सहित अन्य प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण से अधिक कुछ खास करने की कोशिश नहीं की गयी।अगर हम हिंदू माइथोलॉजिकल काल गणना के अनुसार पृष्ठभूमि में जाएं तो कुछ इतने विशिष्ट प्रकरण मौजूद हैं, जिन पर अवश्य दृष्टिपात किया जाना चाहिए।

संपादकीय

विकास में योगदान

आर्थिक मंदी के बीच उत्पादन शुरू करने के लिए उद्यमों को संचालन लागत में कटौती करने, उत्पादन अक्षमताओं को कम करने और अपशिष्ट उत्पादन को कम करने की आवश्यकता है। आरईसीपी रणनीतियों को अपनाने से उद्यमों को लागत कम करने और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ तरीके से आर्थिक विकास में योगदान करते हुए उनकी लाभप्रदता बढ़ाने में मदद मिलेगी। आरईसीपी रणनीतियों को अपनाने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि अधिकांश उपाय कम लागत के हैं और साथ ही ऊर्जा, पानी, कच्चे माल को सस्टेनेबल तरीके से इस्तेमाल करने में मदद मिलेगी और इसके चलते अपशिष्ट तथा अपशिष्ट जल कम पैदा होगा। प्रकाश का अनुकूलन कर बिजली बचाई जा सकती है। जैसे– खिड़कियों की सफाई करके, उपयोग की जगह पर प्रकाश प्रदान करके, अनावश्यक रोशनी बंद करके और ऊंची छतों पर लाइटें लगाने से बचकर। दोपहर के भोजन और चाय के ब्रेक के दौरान कम अहमियत वाली रोशनी को बंद करने के प्रावधान बनाने से भी बिजली बच सकती है। कंप्रेस्ड वायु प्रणालियों, पानी और भाप पाइपलाइनों में लीकेज को ठीक करके भी बचत की जा सकती है। उदाहरण के लिए, डिलीवरी एयर में एक बार प्रेशर की कमी से कंप्रेसर में बिजली की खपत में लगभग 6–10 प्रतिशत की कमी आएगी। इसके अलावा कई अन्य अतिरिक्त उपाय करके भी ऊर्जा बचाई जा सकती है।

मानव जाति पर न सिर्फ वायरस का खतरा मंडरा रहा है बल्कि इसकी वजह से बंद हुई आर्थिक गतिविधियों ने भी उसको संकट में डाल दिया है।

पर्यावरण की दृष्टि से

प्रह्लाद तिवारी।

दुनिया कोविड–19 के खिलाफ एक अभूतपूर्व लड़ाई लड़ रही है। एक ऐसी लड़ाई जिसमे लगभग लगभग 3.5 लाख मारे जा चुके हैं। और इस महामारी से अब तक लगभग 56 लाख लोग संक्रमित हो चुके हैं। मानव जाति पर न सिर्फ वायरस का खतरा मंडरा रहा है बल्कि इसकी वजह से बंद हुई आर्थिक गतिविधियों ने भी उसको संकट में डाल दिया है।

"आत्मनिर्भर भारत अभियान" की महत्वाकांक्षा को समझते हुए और सरकार के आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज का सही तरीके से इस्तेमाल करने के लिए, उद्योगों को आरईसीपी अपनाने की जरूरत है। इससे लागत कम होगी और लाभ भी मिलेंगे और साथ ही यह पर्यावरण की दृष्टि से सस्टेनेबल भी होगा। हमारे उद्योगों को सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) 2030 को पूरा करने और कोविड–19 के कारण होने वाली आर्थिक मंदी से निपटने के लिए राष्ट्रीय रूप से निर्धारित योगदान को प्राप्त करने के लिए स्थायी तरीके से प्रतिस्पर्धी बने रहने की आवश्यकता है।

भारत में इस महामारी ने श्रम आधारित सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यमों को सबसे अधिक प्रभावित किया है जो लगभग 120 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। इसमें ऑटोमोबाइल,

स्मार्टफोन निर्माता, सौर उद्योग, टेक्सटाइल, इस्पात निर्माण इत्यादि शामिल हैं। आर्थिक मंदी से निपटने और उद्योगों के सामान्य संचालन के लिए, भारत सरकार ने 20 लाख–करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की घोषणा की है। यह आर्थिक पैकेज उद्यमों के लिए बहुत जरूरी भी था। इससे आवश्यक लिक्विडिटी बनाए रखने के लिए उद्यम व्यावसायिक कार्यों के लिए संपार्श्विक मुक्त ऋण यानी कोलेटरल फ्री लोन प्राप्त कर सकेंगे। उद्योगों को अगले चरण में धीरे–धीरे यह सुनिश्चित करते हुए परिचालन शुरू करना है कि कर्मचारी कोरोना वायरस मुक्त वातावरण में काम कर सकें और साथ–साथ रिसोर्स एफिशिएंसी क्लीनर प्रोडक्शन (आरईसीपी) को अपनाया जा सके। इन कदमों से उत्पादन में लगने वाले संसाधनों को संतुलित किया जा सकता है।

फैक्ट्री परिसर में कोरोना मुक्त वातावरण बनाने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं। परिसर को निसंक्रामक करने के लिए 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट और 70 प्रतिशत अल्कोहल–आधारित सैनिटाइजर के संयोजन का इस्तेमाल करें। श्रमिकों की सुरक्षा भी इंफ्रा रेड थर्मामीटर वाली नॉन कॉन्टेक्ट थर्मल स्क्रीनिंग करते हुए और उन्हें एल्कोहल वाले सैनिटाइजर देकर सुनिश्चित की जा सकती है। फैक्ट्री परिसर में प्रवेश करने वाले श्रमिकों के कोरोना संक्रमण की स्थिति जांचने के लिए उनके मोबाइल फोन में आरोग्य सेतु एप को अपडेट किया जा सकता है। ऐसा करते हुए एक सैनिटाइजेशन टनल बनाई जा सकती है जिसमें से श्रमिक गुजरे। उन्हें आवश्यक पीपीई आवंटित करें और यह सुनिश्चित करें कि वे उन्हें पहने। इसके साथ–साथ ही उन्हें स्वच्छ शौचालय सुविधाएं प्रदान करना भी उतना ही आवश्यक है।

कार्यस्थल पर शारीरिक दूरी बनाने के लिए टुकड़ों में कई शिफ्ट संचालित की जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त उपकरणों में किसी तरह की अप्रत्याशित खराबी और उनके कार्य करने की अवधि को बढ़ाने के लिए उनमें ऑयलिंग करना, धूल साफ करने, बाहरी वस्तु को हटाने और तारों के ढीले कनेक्शन के लिए विभिन्न मशीनों का निरीक्षण किया जाना चाहिए।

सूडोकु नवताल- 5371

मध्यम

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5370 का हल

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9

अपना ब्लॉग

पानी की भी बचत की जा सकती

मोहन। कई उपायों से पानी की भी बचत की जा सकती है। अपशिष्ट जल को कम करने के लिए एरेटर्स और सेंसर लगाया जा सकता है जिससे पानी के बहाव को कम किया जा सकता है। प्रति फ्लश पानी की मात्रा को कम करने के लिए वॉटर–फिल्ड बोतलों को हाई वॉल्यूम शौचालय के टैंकों में रखकर और पुनर्चक्रण और आरओ के बेकार पानी का उपयोग फर्श की सफाई और धोने के लिए किया जा सकता है। सफाई के लिए प्रभावी तरीकों जैसे कि झाड़ू और सूखे तरीकों से सफाई को बढ़ावा देकर और वर्षा जल संचयन जैसे तरीकों से भी पानी की खपत कम की जा सकती है। इसमें कच्चे माल के भंडारण, अर्द्ध–निर्मित सामान और तैयार माल के साथ–साथ उपकरण और इन्वेंट्रीज के लिए स्थान निर्दिष्ट करना भी शामिल है। साथ ही कुछ हाउसकीपिंग की आदतों को अपनाना जरूरी है जैसे– मानव–मशीन पथों को चिन्हित करना और सेट–इन–ऑर्डर को लागू किया।